दूध

पारो आनन्द

खुशखबरी, खुशखबरी!" चीखता, चिल्लाता अम्बर धड़धड़ाता हुआ सीढ़ियाँ चढ़ता आया। उसका पटका सिर के पीछे लटक रहा था और बाल हवा में लहरा रहे थे।

"खुशखबरी, शहर में दंगा हो गया है..."

"ओए मरजाणेया! की बकवास कर रयां ऐं?" हाथों का आटा छुड़ाती हुई माँ रसोई से बाहर दौड़ीं।

"न, न, न, ये बकवास नहीं सच है। रब दी सौं...। पूरे शहर में दंगा हो रहा है। स्कूल बन्द हो गए हैं, मुसलमान जान बचाने के लिए छुप-छुपा रहे हैं।"

"...और तू इसे अच्छी खबर कह रहा है?" गुसलखाने से निकलते हुए पिता जी बोले। "बता, यह खुशखबरी कैसे हुई जब युसुफ और शाहिद जैसे तेरे अपने दोस्तों को छुपना पड़े?" अपने लम्बे बालों से पानी निचोड़ते हुए वे बोले।

अम्बर ज़ोर से हँसा, "नहीं, पिता जी मेरे दोस्त नहीं सिर्फ मुसलमान।"

"ओए खोत्या! तू क्या समझता है ... युसुफ और शाहिद कौन हैं?"

"... वे मुसलमान हैं? मुझे तो पता ही नहीं था! और उनके अम्मी-अब्बू भी?"

"और क्या, बेवकूफ!" अन्दर आते अमित ने बातों का आखरी सिरा पकड़कर अम्बर की खिल्ली उड़ाते हुए कहा।

"मैं बेवकूफ नहीं। मेरे पास एक ऐसी अच्छी खबर है जिसके बारे में तू भी नहीं जानता।" तड़ाक से अम्बर बोला। लेकिन पिताजी गुस्से में बीच में ही बोल पड़े, "अम्बर, तुझे कैसे पता कि दंगे अच्छे होते हैं?"

"स्कूल जो बन्द हो जाते हैं पिताजी! तो क्या यह अच्छी खबर नहीं हुई?" विजयी मुस्कान के साथ उसने घूमकर अपने भाई को देखा।

"स्कूल बन्द? ओए होए!" अमित खुशी से चिल्लाया। वह स्कूल जाने के लिए पूरी तरह से तैयार था। कलफ लगे कपड़े पहनकर, सिर पर तेल लगाए – हमेशा की तरह समय से आधे घण्टा पहले एकदम तैयार। और एक उसका छोटा भाई है अम्बर। तब तक

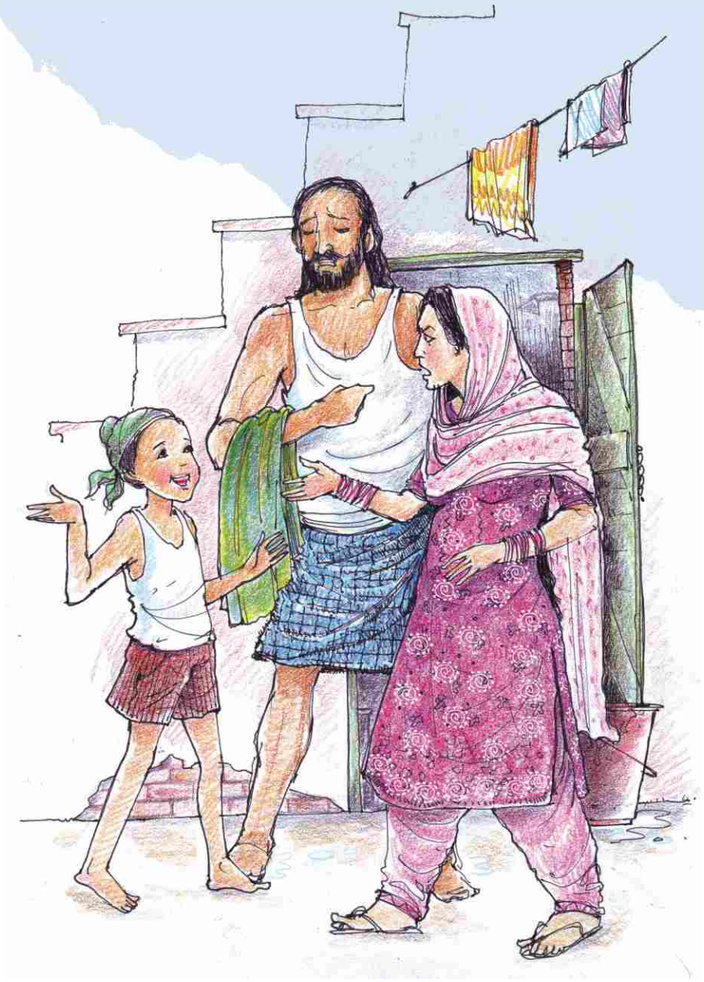

बिस्तर नहीं छोड़ता जब तक माँ का शोर मचाना, जल्दी-जल्दी करना और चादर खींचना शुरू नहीं हो जाता। पर नहीं, अमित ऐसा नहीं है। माँ के साथ-साथ वो भी बिस्तर छोड़ देता है। ताज़ा बनी चाय पीता है। दुबारा गर्माई चाय का स्वाद कितना गन्दा हो जाता है! गर्म-गर्म रोटियों पर ताज़ा बना मक्खन टपकाकर खाने में वाह क्या स्वाद आता है! और रात के खाने के बाद बर्तन जमाने में भी माँ की मदद करता है। अम्बर के ज़िम्मे बस एक ही काम है – अली दूध वाले के दूध लाते ही हर दूसरे दिन डिपो से दूध लाना। बस इतना ही, और आज तो लगता है कि वह उतना भी नहीं कर पाया है।

अचानक हर ओर अफरा-तफरी फैल गई। लोग शोर मचाते इधर-उधर दौड़ रहे थे। रोज़ की तरह आज न गुरबाणी की आवाज़ें और न ही चाय की प्यालियों की आवाज़ें हवा में फैली थीं। हर ओर रेडियो चीख रहा था। पिताजी, माँजी, बड़ी बीजी और बाऊजी एक कोने में धीरे-धीरे फुसफुसाकर बातें कर रहे थे।

अम्बर चुपके से अमित के पास गया और उसके गले में हाथ डालते हुए फुसफुसाया, "चल, पतंग उड़ाते हैं... जल्दी आ। छत पर चलते हैं। किसी को पता भी नहीं चलेगा। वो सब तो दंगों की खबरों में लगे हैं।"

वे सीढ़ियों की ओर भागे। हाँ, जाते-जाते चरखी और गद्दे के नीचे से पतंग उठाना नहीं भूले। छत पर सुबह की हल्की धूप बिखरी थी। ठण्डी धीमी हवा पतंग उड़ाने के लिए एकदम सही थी।

पतंग तैयार करते हुए अम्बर ने अमित से पूछा, "भैया, दंगे क्या होते हैं?"

"दंगे? दंगों में लोग एक-दूसरे को मारते हैं, उनका सामान लूट लेते हैं – घर, दुकानें जो सामने आए उसे लूट लेते हैं।

"पर क्यों?"

"मुझे नहीं पता..." अमित खीजकर बोला। इसका जवाब उसे सचमुच में पता नहीं था और वो अपने बेवकूफ भाई के सामने इसे स्वीकारना नहीं चाहता था।

"क्या वो लुटेरे हैं?" अम्बर पीछे लगा रहा। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था।

"कुछ दिन पहले जब मोहल्ले में चोरी हुई थी और चोर रसोई के बर्तन तक ले गए थे तब तो किसी ने नहीं कहा कि दंगे हो गए हैं। ये लोग भी तो चोर हैं!" अम्बर बोला

"ओफ्फ हो, चुपकर। चिप्पी देना...।" अम्बर ने उसे भूरी टेप दे दी ताकि पतंग इधर-उधर न डोले। उसको अब भी समझ नहीं आ रहा था। वो तो बस यही जानता है कि लोग दूसरों को इसलिए लूटते हैं ताकि उनको वो सारा सामान मिल जाए जो उनके पास नहीं है। "लेकिन सिर्फ मुसलमानों को ही क्यों लूटें? कितने सारे हिन्दुओं, सिखों के पास तो उनसे भी ज़्यादा पैसे हैं। उन्हें क्यों नहीं लूटते? और फिर जान से मारने की क्या ज़रूरत है? क्यों नहीं बस सामान ले लेते अगर उन्हें सामान की इतनी ही ज़रूरत है तो?"

"बेवकूफ, वो मुसलमान है ना, इसलिए।" अमित समझ गया कि अम्बर के सवालों से पीछा छुड़ाना मुश्किल है।

"तो...? हामिद भाईसाहब भी तो मुसलमान हैं, पर हम उनको मार तो नहीं रहे। उनको लूट भी नहीं रहे। वो तो पिताजी के दोस्त हैं, है ना?"

"देख भाई, तेरे को ये राजनीति पर बातें करनी हैं या पतंग उड़ानी है? तू... तू तो निरा बेवकूफ है। अमित ज़ोर डालते हुए बोला।"

अमित ने पतंग सही की और अम्बर को थोड़ा पीछे जाकर माझे को ढील देने को कहा। अम्बर बिना मुड़े ही पीछे रेलिंग की ओर चल दिया। इसमें कोई शक नहीं कि वो पतंग ही उड़ाना चाहता था, पर दिमाग में हलचल तो मची ही हुई थी। अगर यह फकत चोरी थी तो दंगों की वजह से स्कूल क्यों बन्द किए गए? हर बार किसी के घर से स्कूटर या साइकिल चोरी होने पर स्कूल थोड़ी न बन्द होते हैं। फिर अब क्यों? और केवल मुसलमानों के घर ही क्यों चोरी होती है जब पड़ोस में कितने सारे अमीर हिन्दू रहते हैं? पर और सवाल करने की उसकी हिम्मत न हुई। उसने चरखी उठाई और ढील देने लगा।

अभी अम्बर पतंग को उछालने ही वाला था कि नीचे से आती दौड़ने-भागने की आवाज़ों से एक बार फिर उसका ध्यान उधर की हो गया। रेलिंग से झाँककर देखा तो हैरान रह गया। गली में दूधवाला अली भाग रहा था। यहाँ सभी उसे पहचानते थे। हर रोज़ एक बड़ा दूध का डिब्बा लेकर आता था। अम्बर हँसने लगा। क्या मज़ेदार नज़ारा था – दूधवाला एक बड़ा-सा... खुद जितना लम्बा ड्रम लेकर भाग रहा था... अजीब-से बेढंगे तरीके से। दूध उस पर गिर रहा था।

"अम्बी ओए, इधर-उधर क्या देख रहा है? इधर देख।"

"देख भइया, इधर देख। अपना दूधवाला कैसे भागा जा रहा है। ये क्यों भाग रहा है? उसका सारा दूध गिर जाएगा।" अम्बर बोला। अमित भी आ गया। अम्बर के पीछे खड़ा होकर वह ज़ोर से चिल्लाया, "अरे अली बाबा, दौड़ो-दौड़ो! ज़ोर से दौड़ो। जितना तेज़ दौड़ सको। चालीस चोर तुम्हारे पीछे लगे हैं?"

लोगों का एक हुजूम दूधवाले के पीछे था। कुछ के हाथ में लाठियाँ, कुछ के हाथ में ईंटें, बोतलें थीं।

दोनों भाई छत पर खड़े हँस-हँसके दोहरे हुए जा रहे थे। दुनिया पागल हो गई है....। वे इतना हँसे की आँखें गीली हो गईं।

अचानक अपनी पनीली आँखों से उन्होंने देखा कि जैसे ही दूधवाला उनके पड़ोस में रहने वाले अमर भ्राजी के घर के सामने से गुज़रा वे तेज़ कदमों से चलते हुए बाहर आए और भागते दूधवाले को अपनी बाँहों में ले लिया। दूधवाला झटके से रुक गया। उसके सिर पर रखा दूध का ड्रम कुछ पलों के लिए डोला, शायद वो आगे ही जाना चाहता था।

"शाबास, अमर भ्राजी।" अमित चिल्लाया। उसकी हँसी अब भी थम नहीं रही थी। "इस पागलपन को आप ही खत्म करेंगे!"

दोनों ने अली को झुकते और फिर आगे की ओर गिरते देखा।

"देखना कहीं गिर ही न जाए...." वे छत से चिल्लाए। लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। अचानक गली में दूध की सफेद नदी बहने लगी थी। और अली उस के बीच में गिर रहा था।

भागता हुआ हुजूम भौंचक्का-सा रुक गया। भौंचक्के-से बच्चों ने अमर भ्राजी को एक कदम पीछे होते देखा – अपने पाँवों को झटकार कर उस पर ठहरी दूध की बूँदों को गिराते हुए। अपनी शॉल को हाथों पर समेटते हुए उन्होंने ऊपर खड़े लड़कों को देखा। तब तक अम्बर उनके हाथों में चमकती कटार की एक झलक देख चुका था।

उसकी नज़रें घूमकर दूधवाले पर थम गईं। दूध का सफेद दरिया धीरे-धीरे एक और दरिया से मिलकर रंग बदल रहा था – लाल को गुलाबी होते देख वे समझ गए थे कि दंगे क्या होते हैं।

"अमित..." भाई ने जैसे ही उसे अपनी बाँहों में समेटा अम्बर बड़बड़ाया, "मुझे दंगे अच्छे नहीं लगते।"

दोनों मन ही मन सोचने लगे कि वो कभी भी दूध को लाल न होने देंगे।

सभी चित्रः जोएल गिल